दीदी मनमोहिनी जी की मधुर स्मृति में

बाबा के संग-संग में, रंगी हो उनके रंग में
दीदी साथ बाबा के मुस्का रही,
यादों में मन के परदे पे तुम आ रही...

अनोखे चरित्रों के वे रूप लेके
दिलों पर हो छाई प्रभु प्यार देके
गज़ब का था जादू तेरी पालना में
भुलाये न भूले जो पाये वो जाने
अभी भी राहें कितनों को दिखला रही...

वो दीदी व दादी का मिलना-बहलना
दो हंसों की जोड़ी का हंसना-हंसाना
हर रोज़ मधुबन में चलना-निकलना
वो दृष्टि का देना, वो पढ़ना-पढ़ाना
आंगन में लगता मधुबन के बहला रही....

वो अमृतवेले का योग कराना
करके सिखाना, वो उड़ना-उड़ाना
समय पर पहुंचना, वो आगे बैठना
वो मुरली से ले प्रश्न फिर पूछ लेना
हर बात में तुम तो आगे रही....

अब घर है जाना-यही धुन सुनाती
सुनायी नहीं वो तो करके दिखा दी
निकल सबसे आगे जल्दी है जाना
आगे की सेवा को आगे बढ़ाना
वही गीत कानों में अब भी गा रही....